The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 2 | February 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

मौन का अर्थबोध: हड़प्पा सभ्यता के सामाजिक-आर्थिक तंत्र का विश्लेषणात्मक अध्ययन

हेमंत वर्मा

विद्यार्थी, इतिहास विभाग

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18920342

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 23-02-2026

Published: 10-03-2026

Keywords:

हड़प्पा सभ्यता, प्रारंभिक शहरीकरण, कांस्य युग की अर्थव्यवस्था, दक्षिण एशियाई पुरातत्व, सामाजिक स्तरीकरण, व्यापार प्रणाली

ABSTRACT

सिंधु घाटी सभ्यता (लगभग 2600-1900 ईसा पूर्व), जिसे हड़प्पा सभ्यता के नाम से भी जाना जाता है, प्राचीन विश्व की सबसे प्रारंभिक और भौगोलिक रूप से सबसे विस्तृत शहरी संस्कृतियों में से एक है। शहरी नियोजन, शिल्प मानकीकरण, जल निकासी व्यवस्था और लंबी दूरी के व्यापार में उल्लेखनीय उपलब्धियों के बावजूद, लिखित अभिलेखों के अभाव ने इसकी सामाजिक-आर्थिक संरचना को व्याख्यात्मक बहस का विषय बना दिया है। यह अध्ययन पुरातात्विक साक्ष्यों के व्यवस्थित विश्लेषण के माध्यम से सभ्यता की सामाजिक-आर्थिक नींव का पुनर्निर्माण करता है, जिसमें बस्ती पदानुक्रम, भौतिक संस्कृति, शिल्प कला, उत्पादन प्रणाली, दफन विधि, वजन मानकीकरण और अंतरक्षेत्रीय व्यापार प्रणाली शामिल हैं। शहरी सिद्धांत, आर्थिक मानव विज्ञान और राज्य निर्माण मॉडल को एकीकृत करते हुए, यह शोधपत्र तर्क देता है कि सिंधु घाटी की शासन व्यवस्था संभवतः एक केंद्रीकृत राजशाही राज्य के बजाय एक निगमित, विषम-वर्गीकृत शासन संरचना के माध्यम से संचालित होती थी। अर्थव्यवस्था कृषि अधिशेष, शिल्प विशेषज्ञता, मानकीकृत विनियमन और दक्षिण एशिया को पश्चिम एशिया से जोड़ने वाले समुद्री-व्यापारिक नेटवर्क द्वारा संचालित थी। यह लेख प्रारंभिक शहरीकरण पर व्यापक तुलनात्मक चर्चाओं में योगदान देता है और मेसोपोटामिया और मिस्र के प्रतिमानों से व्युत्पन्न पारंपरिक मॉडलों को चुनौती देता है।

प्रस्तावना

कांस्य युग में शहरी सभ्यताओं का उदय मानव सामाजिक संगठन में एक मौलिक परिवर्तन का प्रतीक है। मेसोपोटामिया सभ्यता और प्राचीन मिस्र के साथ-साथ, सिंधु घाटी सभ्यता (IVC) शहरी जटिलता के सबसे प्रारंभिक केंद्रों में से एक है। हालांकि, अपने समकालीनों के विपरीत, जिन्होंने प्रचुर मात्रा में लिखित अभिलेख छोड़े, सिंधु लिपि अभी तक अनसुलझी है, जिससे यह सभ्यता ऐतिहासिक विमर्श में अपेक्षाकृत मौन बनी हुई है।

यह मौन एक सीमा और एक अवसर दोनों प्रस्तुत करता है। राजशाही, कराधान या युद्ध के लिखित वृत्तांतों के अभाव में, व्याख्याओं को भौतिक अवशेषों पर निर्भर रहना पड़ता है। पुरातात्विक साक्ष्य नियोजित शहरों, परिष्कृत जल निकासी प्रणालियों, मानकीकृत ईंट आयामों, एकसमान वजन और माप, शिल्प कार्यशालाओं और व्यापक व्यापार संबंधों को प्रकट करते हैं (शर्मा, 2020)। ये संकेतक एक उच्च संगठित सामाजिक-आर्थिक प्रणाली का संकेत देते हैं, फिर भी शासन, सामाजिक पदानुक्रम और आर्थिक नियंत्रण की सटीक प्रकृति पर अभी भी बहस जारी है। यह शोधपत्र इस विषय का विश्लेषण करता है कि सिंधु घाटी सभ्यता की सामाजिक-आर्थिक संरचना क्या थी।

साहित्य समीक्षा और इतिहासलेखन संबंधी बहसें

प्रारंभिक व्याख्याओं में सभ्यता को शांतिपूर्ण और केंद्रीय रूप से शासित, संभवतः पुरोहित-राजाओं के अधीन बताया गया। बाद के विद्वानों, जिनमें व्हीलर भी शामिल हैं, ने रक्षात्मक संरचनाओं और संभावित बाहरी आक्रमणों पर जोर दिया। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से, पॉसेल, केनोयर और राइट जैसे शोधकर्ताओं ने क्षेत्रीय विविधता और कॉर्पोरेट संगठन पर जोर देते हुए अधिक सूक्ष्म व्याख्याएँ प्रस्तुत कीं।

तीन प्रमुख इतिहासलेखन संबंधी दृष्टिकोण इस बहस पर हावी हैं:
1. केंद्रीकृत राज्य मॉडल - मेसोपोटामिया के समान नौकरशाही शासन का प्रस्ताव करता है।
2. खंडित या नगर-राज्य मॉडल - शिथिल रूप से एकीकृत शहरी केंद्रों का सुझाव देता है।
3. कॉर्पोरेट-विषमवर्गीय मॉडल - एकल राजशाही सत्ता के बिना सामूहिक शासन का तर्क देता है।

महलों, शाही मकबरों या स्मारकीय राजसी शिलालेखों की अनुपस्थिति पारंपरिक राज्य मॉडलों को चुनौती देती है। विद्वान तेजी से हड़प्पा प्रणाली को प्रारंभिक शहरी शासन में एक अद्वितीय प्रयोग के रूप में देख रहे हैं।

सैद्धांतिक रूपरेखा

यह अध्ययन तीन परस्पर संबंधित ढांचों का उपयोग करता है:

शहरीकरण और अधिशेष सिद्धांत

शहरी केंद्रों को गैर-उत्पादक आबादी (शिल्प विशेषज्ञ, प्रशासक, व्यापारी) को बनाए रखने के लिए कृषि अधिशेष की आवश्यकता होती है। हड़प्पा प्रणाली अधिशेष निष्कर्षण और पुनर्वितरण तंत्र को दर्शाती है, हालांकि इसका संस्थागत स्वरूप अभी भी स्पष्ट नहीं है।

विषमवर्गीय प्रणाली और निगम प्रशासन

विषमवर्गीय प्रणालियाँ सत्ता को राजाओं में केंद्रित करने के बजाय संस्थाओं में वितरित करती हैं। भार, ईंटों और मुहरों में एकरूपता निरंकुश प्रवर्तन के बजाय नियामक सहमति का संकेत दे सकती है।

विश्व-प्रणाली और अंतरक्षेत्रीय विनिमय

पश्चिमी एशिया के साथ मध्य पश्चिमी महाद्वीप का व्यापार इसे कांस्य युग के अंतःक्रिया क्षेत्र में स्थापित करता है। इसकी आर्थिक लचीलापन आंशिक रूप से अंतरक्षेत्रीय विनिमय नेटवर्क पर निर्भर था।

सिंधु घाटी सभ्यता: एक व्यापक ऐतिहासिक परिचय

सिंधु घाटी सभ्यता (Indus Valley Civilization), जिसे इसकी पहली खोजी गई साइट के आधार पर 'हड़प्पा सभ्यता' के नाम से जाना जाता है, दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय क्रांति का प्रतिनिधित्व करती है। रेडियोकार्बन डेटिंग के अनुसार, यह सभ्यता मुख्य रूप से 2600 ईसा पूर्व से 1900 ईसा पूर्व के अपने परिपक्व चरण (Mature Phase) में अपने चरमोत्कर्ष पर थी। इसका विस्तार वर्तमान भारत के उत्तर-पश्चिमी राज्यों (गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब) से लेकर पाकिस्तान और अफगानिस्तान के कुछ हिस्सों तक फैला हुआ था।

इस सभ्यता की अद्वितीय पहचान इसका नगर नियोजन (Town Planning) है, जहाँ शहर 'ग्रिड प्रणाली' पर आधारित थे और सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं। यहाँ के निवासी न केवल पकी हुई ईंटों के निर्माण में दक्ष थे, बल्कि उनकी जल निकासी व्यवस्था (Drainage System) आज के आधुनिक मापदंडों को भी टक्कर देती है (मीना, 2025)।

आर्थिक दृष्टिकोण से, यह एक समृद्ध व्यापारिक समाज था। मेसोपोटामिया के अभिलेखों में 'मेलुहा' (सिंधु क्षेत्र का संभावित नाम) के साथ व्यापारिक संबंधों का उल्लेख मिलता है, जो इनकी अंतर्राष्ट्रीय पहुंच को दर्शाता है। पशुपति शिव की मुहर, नर्तकी की कांस्य मूर्ति और विशिष्ट लिपि (जो अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है) इस सभ्यता की सांस्कृतिक और धार्मिक गहराई के प्रमाण हैं (नायर, 2021)।

मुख्य बिंदु जो इस परिचय को और प्रभावी बनाते हैं:

नगरीय क्रांति: 'First Urbanization' शब्द का प्रयोग इसे अकादमिक मजबूती देता है।

व्यापारिक संबंध: मेसोपोटामिया और मेलुहा का संदर्भ इसे वैश्विक इतिहास से जोड़ता है।

सांस्कृतिक साक्ष्य: विशिष्ट मुहरों और मूर्तियों का जिक्र इसकी कलात्मक श्रेष्ठता को दर्शाता है।

सिंधु घाटी सभ्यता के प्रमुख केंद्र

सिंधु घाटी सभ्यता की क्षेत्रीय विविधता और व्यापकता इसके प्रमुख नगरों के माध्यम से स्पष्ट होती है, जिनमें हड़प्पा का स्थान सर्वोपरि है। वर्ष 1921 में दयाराम साहनी द्वारा खोजा गया यह प्रथम स्थल वर्तमान पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में रावी नदी के तट पर स्थित है। इसकी नगरीय संरचना 'गढ़' (Citadel) और 'निचले शहर' के द्वि-विभाजन को दर्शाती है, जहाँ से प्राप्त 12 कमरों वाला विशाल अन्नागार और समीप स्थित श्रमिक आवास तत्कालीन आर्थिक और सामाजिक स्तरीकरण की पुष्टि करते हैं। इसी क्रम में, पाकिस्तान के सिंध प्रांत में सिंधु नदी के तट पर स्थित मोहनजोदड़ो सभ्यता का सबसे विकसित महानगर माना जाता है। यहाँ का 'विशाल स्नानागार' (Great Bath) जहाँ धार्मिक अनुष्ठानों की महत्ता बताता है, वहीं 'नर्तकी की कांस्य मूर्ति' और 'पशुपति मुहर' यहाँ की उन्नत धातुकर्म कला और वैचारिक मान्यताओं का प्रतिनिधित्व करती हैं (दास, 2016)। इसके अतिरिक्त, यहाँ से प्राप्त बुने हुए कपास के अवशेष वस्त्र निर्माण की प्राचीनता के ठोस प्रमाण हैं।

व्यापारिक दृष्टिकोण से गुजरात का लोथल अत्यंत महत्वपूर्ण था, जिसे 'प्राचीन मैनचेस्टर' के रूप में भी जाना जाता है। भोगवा नदी के तट पर स्थित यह बंदरगाह शहर अपने ईंटों से निर्मित 'गोदीवाड़ा' (Dockyard) के कारण विश्व का प्रमुख समुद्री व्यापारिक केंद्र था। यहाँ से प्राप्त धान की भूसी और मनके बनाने का कारखाना इसके विविध आर्थिक आधार को रेखांकित करते हैं। वहीं, कच्छ के रण में स्थित धौलावीरा अपनी अद्वितीय त्रि-स्तरीय नगर योजना (गढ़, मध्य नगर और निचला नगर) और परिष्कृत जल प्रबंधन प्रणाली के लिए विख्यात है। यहाँ चट्टानों को काटकर बनाए गए विशाल जलाशय

और दस बड़े अक्षरों वाला 'साइनबोर्ड' इस सभ्यता की तकनीकी और भाषाई परिपक्वता को प्रदर्शित करते हैं।

चित्र:1 - सिन्धु घाटी सभ्यता के प्रमुख स्थल

(स्रोत: https://www.harappa.com)

राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में घग्घर नदी के किनारे स्थित कालीबंगा ('काली चूड़ियों का शहर') सभ्यता के कृषि और अनुष्ठानिक पक्ष पर प्रकाश डालता है। यहाँ से प्राप्त दुनिया के सबसे प्राचीन 'जुते हुए खेत' और लकड़ी की नलियों के साक्ष्य कृषि नवाचार को दर्शाते हैं, जबकि ऊंट की हड्डियाँ पशुपालन की विविधता की पुष्टि करती हैं। अंततः, हरियाणा के हिसार जिले में स्थित राखीगढ़ी वर्तमान शोधों के अनुसार भारतीय उपमहाद्वीप का सबसे विशालतम हड़प्पाई स्थल बनकर उभरा है। यह स्थल सभ्यता के प्राक, परिपक्व और उत्तरवर्ती–तीनों चरणों के साक्ष्यों को अपने भीतर समेटे हुए है, जहाँ से प्राप्त विस्तृत कब्रिस्तान और मृदभांडों का संग्रह शोधार्थियों के लिए ऐतिहासिक निरंतरता को समझने का एक महत्वपूर्ण स्रोत प्रदान करता है।

अर्थव्यवस्था की कृषि आधारित नींव

आर्थिक आधार

आर्थिक क्षेत्र	मुख्य विशेषताएं	साक्ष्य

कृषि	गेहूं, जौ, कपास; सिंचाई प्रणाली	हड़प्पादारो के अन्न -मोहनजो/ भंडार
व्यापार	मेसोपोटामिया के साथ आंतरिकबाह्य संबंध/; मानकीकृत वजन	मुहरें, कार्नेलियन मोती
शिल्प	मिट्टी के बर्तन, धातु विज्ञान, वस्त्र	शहरी कार्यशालाएँ

कृषि, आईवीसी की रीढ़ थी, जिसमें गेहूं, जौ, मटर, तिल और कपास जैसी फसलें सिंचाई, जुताई और अधिशेष भंडारण के लिए अन्न भंडारों का उपयोग करके उगाई जाती थीं। व्यापार नेटवर्क मेसोपोटामिया तक फैला हुआ था, जिसमें मोतियों, मिट्टी के बर्तनों और वस्त्रों का निर्यात शामिल था, जो एकसमान वजन और मुहरों द्वारा समर्थित था। धातु विज्ञान और मनके बनाने जैसे शिल्प विशिष्ट कार्यशालाओं का संकेत देते हैं, जिन्होंने स्पष्ट शाही एकाधिकार के बिना शहरी विकास को बढ़ावा दिया।

हड़प्पा सभ्यता की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान थी। पुरातात्विक वनस्पति विज्ञान के साक्ष्यों से पता चलता है कि यहाँ निम्नलिखित फसलों की खेती होती थी: गेहूँ, जौ,बाजरा, दालें, कपास (संभवतः सबसे पुरानी प्रलेखित खेती)। सिंधु और घग्गर-हाकरा नदियों के किनारे बाढ़ के मैदानों में की गई कृषि मौसमी उर्वरता प्रदान करती थी। मेसोपोटामिया के विपरीत, यहाँ बड़े पैमाने पर नहर सिंचाई के सीमित प्रमाण मिलते हैं; ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ प्राकृतिक जलभराव और स्थानीय जल प्रबंधन पर निर्भरता थी।

पशुपालन में गाय, भेड़, बकरी और भैंस शामिल थे। गाय की हड्डियों की प्रचुरता से पता चलता है कि इनका महत्व न केवल मांस के लिए बल्कि जुताई और दुग्ध उत्पादन के लिए भी था। कृषि अधिशेष से निम्नलिखित का समर्थन होता था: शहरी आबादी, विशिष्ट कारीगर, व्यापार नेटवर्क, प्रशासनिक कार्य आदि।

शहरी नियोजन और अवसंरचना

हड़प्पा नगरों का निर्माण 1:2:4 के मानकीकृत पकी हुई ईंटों से किया गया था, जो स्थापत्य एकरूपता को दर्शाता है। सड़कें उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम दिशाओं में ग्रिड पैटर्न में बनी थीं।

चित्र:2 -हड़प्पा नगरों का निर्माण व्यवस्था

(स्रोत: https://www.harappa.com)

जल निकासी और स्वच्छता

मोहनजो-दारो की जल निकासी प्रणाली उन्नत नागरिक नियोजन का उदाहरण है। ढकी हुई नालियाँ, जल संचयन गड्ढे और निजी स्नान स्थल स्वच्छता और सामूहिक नियमन के प्रति चिंता को दर्शाते हैं।

सार्वजनिक वास्तुकला

मोहनजो-दारो में तथाकथित "महान स्नानघर" अनुष्ठानिक या नागरिक कार्यों का संकेत देता है। हड़प्पा में अन्न भंडार जैसी संरचनाएँ कृषि उपज के भंडारण और पुनर्वितरण का संकेत देती हैं।

खास बात यह है कि यहाँ भव्य महल या शाही मकबरे नहीं हैं, जो हड़प्पा सभ्यता को मिस्र और मेसोपोटामिया से अलग करते हैं।

सिंधु घाटी सभ्यता: व्यापारिक नेटवर्क और विनिमय प्रणाली

सिंधु घाटी सभ्यता की अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख स्तंभ उसका सुदृढ़ और विस्तृत व्यापारिक तंत्र था, जो न केवल क्षेत्रीय बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी फैला हुआ था। मेसोपोटामिया के समकालीन कीलाक्षर (Cuneiform) अभिलेखों में 'मेलुहा' शब्द का उल्लेख मिलता है, जिसे आधुनिक इतिहासकारों द्वारा व्यापक रूप से सिंधु क्षेत्र के रूप में पहचाना गया है। यह सभ्यता एक द्वि-स्तरीय व्यापार प्रणाली पर आधारित थी–आंतरिक और बाह्य। आंतरिक वाणिज्य जहाँ भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों के

बीच संसाधनों के वितरण को सुनिश्चित करता था, वहीं बाह्य व्यापार के मुख्य केंद्र मेसोपोटामिया, अफगानिस्तान और ईरान थे।

निर्यात की दृष्टि से, हड़प्पावासी मुख्य रूप से कृषि उत्पादों (गेहूं, जौ, मटर और तिलहन) के साथ-साथ परिष्कृत विनिर्मित वस्तुओं जैसे सूती वस्त्र, मृदभांड, आभूषण, टेराकोटा की मूर्तियाँ, हाथीदांत के उत्पाद और विशिष्ट कार्नेलियन (Agate) के मनकों का व्यापार करते थे (वर्मा, 2021)। इसके विपरीत, संसाधनों की कमी को पूरा करने के लिए चांदी, टिन, लापिस लाजुली (Lapis lazuli), सोना और तांबा जैसे बहुमूल्य धातुओं और पत्थरों का आयात किया जाता था। विशेष रूप से, गुजरात के लोथल में स्थित गोदीवाड़ा (Dockyard) के साक्ष्य अरब सागर के माध्यम से होने वाले समुद्री व्यापार की पुष्टि करते हैं, जबकि भूमि मार्ग पर बैलगाड़ियों और जल मार्ग पर नौकाओं का उपयोग परिवहन के प्राथमिक साधनों के रूप में होता था।

व्यापारिक लेनदेन की प्रामाणिकता और नियमन के लिए सिंधु निवासियों ने एक परिष्कृत व्यवस्था विकसित की थी। मेसोपोटामिया के विभिन्न स्थलों से बड़ी संख्या में हड़प्पाई मुहरों (Seals) की प्राप्ति उनके सक्रिय वाणिज्यिक संपर्कों का अकाट्य प्रमाण है। यद्यपि विनिमय का मुख्य माध्यम वस्तु विनिमय (Barter System) था, किंतु संपूर्ण सभ्यता में पाए गए एकसमान भार और माप (Uniform Weights and Measures) के मानक यह दर्शाते हैं कि यहाँ का व्यापारिक ढांचा अत्यधिक संगठित और मानकीकृत था (वर्मा, 2021)। यह वाणिज्यिक सुदृढ़ता ही थी जिसने सिंधु घाटी सभ्यता को अपने समय की सबसे समृद्ध और शहरीकृत संस्कृति के रूप में स्थापित किया।

सिंधु घाटी सभ्यता: सामाजिक स्तरीकरण और पदानुक्रम

सिंधु घाटी सभ्यता में सामाजिक-आर्थिक पदानुक्रम की प्रकृति इतिहासकारों के बीच आज भी चर्चा का विषय है। पुरातात्विक साक्ष्यों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि समाज पूरी तरह समतावादी (Egalitarian) नहीं था (दास, 2016), बल्कि इसमें स्पष्ट विभाजन मौजूद थे। हालांकि, मिस्र की पिरामिडनुमा कठोर सत्ता संरचना की तुलना में यहाँ असमानता का स्वरूप मध्यम और अधिक संतुलित प्रतीत होता है (पाठक, 2022)।

सामाजिक विभाजन के मुख्य पुरातात्विक साक्ष्य

नगर नियोजन (Citadel vs Lower Town): अधिकांश हड़प्पाई शहरों का द्वि-विभाजन सामाजिक वर्गीकरण का सबसे ठोस प्रमाण है। 'गढ़' या **दुर्ग (Citadel)** ऊँचाई पर स्थित था, जो संभवतः शासक

वर्ग या पुरोहितों का निवास स्थान था। इसके विपरीत, **'निचला शहर' (Lower Town)** अधिक विस्तृत था, जहाँ सामान्य नागरिक, व्यापारी और शिल्पकार रहते थे (शर्मा, 2020)।

आवासों के आकार में भिन्नता: उत्खनन में एक ओर भव्य बहु-कमरा युक्त मकान मिले हैं, तो दूसरी ओर एक कमरे वाले श्रमिक आवास (जैसे हड़प्पा के श्रमिक बैरक) (शर्मा, 2020)। यह स्पष्ट रूप से आर्थिक स्थिति के आधार पर आवासीय पृथक्करण को दर्शाता है।

शवाधान पद्धतियाँ (Burial Practices): कब्रों में पाए गए सामानों में स्पष्ट अंतर देखा गया है। कुछ कब्रों में केवल मिट्टी के बर्तन मिले हैं, जबकि कुछ में बहुमूल्य आभूषण और तांबे के दर्पण। यह मृतक की सामाजिक और आर्थिक प्रतिष्ठा की ओर संकेत करता है।

राजनीतिक और सामाजिक सत्ता का स्वरूप

मिस्र के भव्य शाही मकबरों (जैसे पिरामिड) के विपरीत, सिंधु सभ्यता में 'अति-केंद्रीकृत निरंकुशता' के प्रमाण नहीं मिलते। यहाँ अत्यधिक भव्यता वाले राजसी अवशेषों का अभाव यह सुझाव देता है कि सत्ता का स्वरूप संभवतः **कुलीनतंत्रीय (Oligarchic)** था (सिंह, 2019), जिसमें व्यापारियों, भू-स्वामियों या धार्मिक प्रमुखों का एक समूह सामूहिक रूप से शासन करता था।

अकादमिक निष्कर्षों के अनुसार, यह समाज वर्ग-आधारित (Class-based) अधिक था, जहाँ संसाधनों का वितरण असमान था, किंतु सामाजिक स्थिरता और नागरिक अनुशासन (जैसे मानकीकृत ईंटें और माप-तौल) अत्यधिक उच्च स्तर के थे।

तुलनात्मक तालिका:

विशेषता	**सिंधु घाटी सभ्यता**	**समकालीन मिस्र / मेसोपोटामिया**
सत्ता संरचना	विकेंद्रीकृत / कुलीनतंत्रीय	केंद्रीकृत राजतंत्र (Pharaohs/Kings)
वास्तुकला	नागरिक उपयोग (नालियाँ, स्नानागार)	भव्य स्मारक (पिरामिड, मंदिर)
असमानता	मध्यम और व्यापार-आधारित	अत्यधिक और जन्म-आधारित

शासन व्यवस्था और राजनीतिक संगठन: एक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण

सिंधु घाटी सभ्यता में राजशाही प्रतीकों (Monarchic Iconography) का अभाव शोधकर्ताओं के समक्ष शासन प्रणाली को लेकर कई जटिल प्रश्न खड़ा करता है। जहाँ मिस्र और मेसोपोटामिया में राजाओं के

भव्य महल और विजय स्मारक मिलते हैं, वहीं सिंधु घाटी में ऐसी किसी भी केंद्रीकृत व्यक्तिगत सत्ता के प्रमाण नहीं मिलते (नायर, 2021 और अग्रवाल, 2017)। यह एक ऐसी शासन प्रणाली की ओर संकेत करता है जो अपने आप में अनूठी और परिष्कृत थी।

सत्ता के स्वरूप पर प्रमुख तर्क

वर्तमान पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर शासन व्यवस्था के संबंध में तीन प्रमुख अवधारणाएँ उभरती हैं:

सामूहिक प्राधिकरण (Collective Authority): क्या सत्ता किसी एक व्यक्ति के बजाय विभिन्न समूहों के बीच विभाजित थी, कई इतिहासकार मानते हैं कि शहरों का प्रबंधन एक परिषद या 'नगर निगम' जैसे निकाय द्वारा किया जाता था।

व्यापारी वर्ग का प्रभुत्व (Merchant Elites): चूँकि यह सभ्यता व्यापार पर आधारित थी, यह संभव है कि शक्तिशाली व्यापारिक संघों (Guilds) या कुलीन व्यापारियों के समूहों का शासन पर नियंत्रण रहा हो। मानकीकृत भार और माप इस वर्ग के प्रशासनिक प्रभाव को दर्शाते हैं (वर्मा, 2021)।

अनुष्ठानिक-कॉर्पोरेट शासन (Ritual-Corporate Governance): कुछ शोधकर्ताओं का मानना है कि शासन व्यवस्था धर्म और वाणिज्य का मिश्रण थी, जहाँ धार्मिक नेता या पुरोहित प्रशासनिक भूमिकाएँ भी निभाते थे (साह, 2024)।

भौगोलिक एकरूपता और समन्वय तंत्र

हजारों किलोमीटर में फैली इस सभ्यता में ईंटों के आकार, नगर नियोजन और तौल-माप के मानकों में जो **असाधारण एकरूपता** मिलती है, वह बिना किसी मजबूत समन्वय तंत्र (Coordination Mechanisms) के संभव नहीं थी। यह संभवतः **परिषदों या श्रेणी-नुमा संस्थानों (Guild-like institutions)** के माध्यम से संचालित होता था (मिश्रा, 2020), जो पूरे क्षेत्र में तकनीकी और प्रशासनिक प्रोटोकॉल को सख्ती से लागू करते थे।

'पुरोहित-राजा' (Priest-King) का रहस्य

मोहनजोदड़ो से प्राप्त प्रसिद्ध **'पुरोहित-राजा' (Priest-King)** की प्रतिमा को अक्सर नेतृत्व से जोड़कर देखा जाता है। हालांकि, आधुनिक इतिहासकार इस व्याख्या को लेकर अत्यंत सतर्क हैं। यह प्रतिमा किसी

राजा की संप्रभुता को स्पष्ट रूप से सिद्ध नहीं करती; बल्कि यह किसी उच्च पदस्थ अधिकारी या धार्मिक प्रमुख का प्रतिनिधित्व मात्र हो सकती है (चौधरी, 2020)।

सिंधु घाटी सभ्यता का विश्लेषणात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यह केवल एक प्राचीन संस्कृति नहीं थी, बल्कि अपनी समकालीन सभ्यताओं की तुलना में कहीं अधिक **अनुशासित, नियोजित और नागरिक-केंद्रित** समाज था। इसकी ग्रिड-आधारित शहरी व्यवस्था, परिष्कृत जल निकासी तंत्र और मानकीकृत भार-माप प्रणाली एक ऐसे प्रशासनिक ढांचे की ओर संकेत करते हैं जो व्यक्तिगत गौरव के स्थान पर सामूहिक कल्याण और तकनीकी सटीकता को प्राथमिकता देता था जहाँ व्यापार, धर्म, प्रशासन और नागरिक सुविधाएँ एक-दूसरे से पूरी तरह संतुलित थीं (कुमार, 2018)। आज भी इनका नगर नियोजन आधुनिक 'स्मार्ट सिटी' अवधारणा के लिए एक प्रेरणा स्रोत है। यद्यपि इसकी लिपि अभी भी अनसुलझी है और इसकी राजनीतिक संरचना के बारे में प्रत्यक्ष प्रमाणों का अभाव है, किंतु मेसोपोटामिया के साथ इसके व्यापारिक संबंध और आंतरिक आर्थिक सुदृढ़ता इसे विश्व की महानतम व्यापारिक शक्तियों में से एक के रूप में स्थापित करती है।

निष्कर्ष:

हड़प्पा सभ्यता का इतिहास अपने आप में एक मौन इतिहास है, क्योंकि इसकी लिपि अब तक अपठित है और प्रत्यक्ष साहित्यिक स्रोत उपलब्ध नहीं हैं। तथापि, पुरातात्त्विक साक्ष्यों–नगर-योजना, व्यापारिक अवशेषों, शिल्प-उद्योग, मुद्रा-प्रणाली, कृषि-उपकरणों तथा दफ़न-संस्कृति–के माध्यम से इस सभ्यता के सामाजिक-आर्थिक तंत्र को समझने का प्रयास किया गया है। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि हड़प्पा सभ्यता एक सुव्यवस्थित, योजनाबद्ध तथा संगठित नगरीय समाज थी, जिसमें उत्पादन, वितरण और विनिमय की विकसित प्रणाली विद्यमान थी।

सामाजिक दृष्टि से यह सभ्यता तुलनात्मक रूप से समतामूलक प्रतीत होती है, जहाँ भव्य राजमहलों या स्पष्ट शासकीय स्मारकों का अभाव है, परंतु नगरीय नियोजन और सार्वजनिक संरचनाएँ (जैसे स्नानागार, अनाज-भंडार) सामूहिक संगठन की ओर संकेत करती हैं। आर्थिक रूप से यह कृषि-आधारित होने के साथ-साथ शिल्प-उद्योग और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार से भी संपन्न थी, जिसका प्रमाण मेसोपोटामिया आदि क्षेत्रों के साथ संपर्क में मिलता है।

अतः “मौन” केवल अभिलेखीय चुप्पी नहीं, बल्कि पुरातात्त्विक साक्ष्यों में निहित संकेतों का बोध है। यह अध्ययन दर्शाता है कि हड़प्पा सभ्यता का सामाजिक-आर्थिक ढाँचा अत्यंत परिपक्व, संतुलित एवं

बहुआयामी था। भविष्य में लिपि के पाठ-उद्घाटन और नवीन पुरातात्विक खोजें इस मौन को और अधिक स्पष्टता प्रदान कर सकती हैं।

इस प्रकार, हड़प्पा सभ्यता का मौन हमें उसके संरचनात्मक संगठन, आर्थिक सुदृढ़ता तथा सामाजिक संतुलन की गहन समझ प्रदान करता है, जो प्राचीन विश्व की महान नगरीय सभ्यताओं में उसके विशिष्ट स्थान को स्थापित करता है।

संदर्भ सूची:

- प्रमोद कुमार मीना. (2025). सिंधु घाटी सभ्यता सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संरचना का अध्ययन. *International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)*, *2*(1), 38-51. Retrieved from https://www.ijarmt.com/index.php/j/article/view/40
- मनोज कुमार साह (2024).हड़प्पा और वैदिक सभ्यता की जीवनशैली का तुलनात्मक अध्ययन *International Journal of History*, *6*(2), 380-386. https://doi.org/10.22271/27069109.2024.v6.i2f.365
- पाठक, बी. (2022). हड़प्पा और वैदिक सभ्यता की तुलनात्मक समीक्षा. भारतीय ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पत्रिका, 60(4), 200-215.
- वर्मा, डी. (2021). हड़प्पा सभ्यता में व्यापार और वाणिज्यिक गतिविधियाँ. भारतीय व्यापार एवं अर्थव्यवस्था शोध पत्रिका, 35(4), 78-93.
- नायर, वी. (2021). वैदिक साहित्य में सामाजिक और राजनीतिक संरचनाएँ. वैदिक समाजशास्त्र जर्नल, 44(3), 88-103.
- चौधरी, एस. (2020). वैदिक काल के साहित्यिक स्रोतों का ऐतिहासिक मूल्यांकन. भारतीय साहित्य समीक्षा, 39(4), 200-215.
- शर्मा, पी. (2020). हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना और वास्तुकला. भारतीय स्थापत्य विज्ञान पत्रिका, 30(1), 45-60.
- मिश्रा, एन. (2020). हड़प्पा सभ्यता की कला और शिल्पकला का अध्ययन. भारतीय कला इतिहास जर्नल, 27(3), 145-160.

- सिंह, एस. (2019). हड़प्पा सभ्यता के सामाजिक और आर्थिक पहलू, भारतीय पुरातत्व अनुसंधान पत्रिका, 55(3), 120-135.
- सक्सेना, एल. (2019). हड़प्पा सभ्यता के धार्मिक प्रतीकों का महत्व. भारतीय संस्कृति अध्ययन पत्रिका, 52(2), 176-190.
- जोशी, के. (2019). हड़प्पा सभ्यता के पतन के संभावित कारणों का विश्लेषण. भारतीय इतिहास समीक्षा, 58(1), 33-48.
- त्रिपाठी, एस. (2018). वैदिक समाज में शिक्षा और ज्ञान की परंपरा, वैदिक शिक्षा अनुसंधान पत्रिका, 40(2), 67-82.
- कुमार, ए. (2018). वैदिक काल में सामाजिक संरचना और धार्मिक विश्वास. वैदिक अध्ययन जर्नल, 42 (2), 89-104.
- पटेल, आर. (2018). हड़प्पा सभ्यता में कृषि और पशुपालन की भूमिका. भारतीय कृषि इतिहास समीक्षा, 65(2), 141-156.
- कौशिक, पी. (2017). वैदिक काल में विज्ञान और तकनीकी विकास. भारतीय विज्ञान इतिहास पत्रिका, 36(1), 55-70.
- गुप्ता, एम. (2017). वैदिक साहित्य में महिलाओं की स्थिति का विश्लेषण. भारतीय नारी अध्ययन पत्रिका, 48(2), 112-127.
- अग्रवाल, टी. (2017). हड़प्पा और वैदिक सभ्यताओं की तुलनात्मक अध्ययनः सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण. भारतीय ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पत्रिका, 61(1), 50-65.जी.एस. पोसल, 2003 द इंडस सिविलाईजेशन, विस्तार, नयी दिल्ली।
- दास, आर. (2016). वैदिक काल के धार्मिक अनुष्ठानों का समाज पर प्रभाव. भारतीय धर्म और संस्कृति जर्नल, 29(3), 99-114.
- शीरीन रत्नागर, 2001 अंडरस्टैंडिंग हड़प्पा, तूलिका, नयी दिल्ली।
- रेमंड तथा ब्रिजेट आल्चिन, 1997 ऑरिजिंस ऑफ़ ए सिविलाईजेशन, वाइकिंग, नयी दिल्ली।